ग्रामीण विकास को रफ्तार दे रही हैं ग्रामीण महिलाएं

सखी मंडल से जुड़ कर ग्रामीण महिलाएं काफी सशक्त हो चुकी हैं. धीरे-धीरे वो आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही हैं. अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकालने में सहयोग कर रही हैं. समूह के जरिये महिलाओं में एकजुटता आयी है. यही वजह है कि सरकार अपनी महत्वपूर्ण योजनाओं को धरातल पर उतारनेके लिए ग्रामीण महिलाओं की मदद ले रही है. टीएचआर (टेक होम राशन) राज्य से कुपोषण दूर करने के लिए सरकार का एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है. इसका लाभ घर-घर तक उपयुक्त लाभुक को पहुंचाने के लिए ग्रामीण महिलाएं सराहनीय कार्य कर रही हैं. इसके अलावा कई जगहों पर स्टॉल के माध्यम से ग्रामीणों को विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दे रही हैं और उन्हें लाभ पहुंचा रही हैं.

कुपोषण दूर करने को आगे आ रहीं दीदियां

टीएचआर के तहत राशन देती सखी मंडल की दीदी.

धनबाद जिले के निरसा प्रखंड अंतर्गत सभी पंचायतों में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के द्वारा टीएचआर का वितरण किया गया. टीएचआर का वितरण महिला समूह की दीदियों के बीच किया गया. वैसे तो पूरे धनबाद जिले में टीएचआर के तहत राशन पहुंचाया जा रहा है. कई जगहों पर यह काम सही तरीके से चल रहा है तो कई जगहों पर टीएचआर को सुचारू रुप से चलाने की तैयारी कर रही हैं. टीएचआर को सखी मंडल के द्वारा आंगनबाड़ी तक पहुंचाने का एक ही मकसद है कि सही हाथों तक पोषाहार पहुंच सके, जिससे गांव के बच्चे, कुपोषित बच्चे, धातु माता और गर्भवती महिलाएं सभी स्वस्थ रहें और स्वस्थ समाज की स्थापना हो. टीएचआर से जुड़ी महिलाएं बताती हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर लोग मजदूरी का काम करते हैं. इसके कारण ग्रामीण अपने बच्चों के खाने पीने का ध्यान सही तरीके से नहीं रख पाते हैं. उचित खान-पान में कमी होने कारण कुपोषण की समस्या सामने आती है. इसके कारण बच्चों की मानसिक और शारीरिक विकास में बाधा आती है. इस योजना से कुपोषण को दूर करने में मदद मिलेगी. इसके साथ ही योजना से गांव में दूसरी महिलाओं को भी रोजगार प्राप्त हो रहा है . महिलाएं पेपर बैग बना रही हैं. महिलाओं को बताया जाता है कि टीएचआर का लाभ मुख्य रूप से चार प्रकार के लोग ले सकते हैं. गर्भवती माताएं, धातृ माताएं और 6 महीने से 3 साल तक के बच्चे और कुपोषित बच्चों को इसका लाभ मिलता है. टीएचआर यानी टेक होम राशन को घर-घर तक पहुंचाने के लिए सरकार ने सखी मंडल की महिलाओं को इसकी जिम्मेदारी दी है. सखी मंडल की दीदियां भी इस काम को करके काफी खुश हैं. उन्हें इस बात की खुशी है कि उनके माध्यम से उन्हीं के गांव में उन्हीं के लोगों के बीच स्वस्थ पोषाहार का वितरण किया जा रहा है. इससे ग्रामीण भी काफी खुश हैं. महिलाओं के कार्य से ग्रामीण काफी खुश हैं. साथ ही ग्रामीणों को इस बात की खुशी है कि उनके घर में बेहतर पोषाहार मिल रहा है. इसके लिए वो अधिकारियों को धन्यवाद भी दे रहे हैं. टीएचआर में शामिल महिलाएं बताती हैं कि सरकार द्वारा बहुत ऐसी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिससे गांव में रहने वाले उस अंतिम व्यक्ति तक को भी लाभ मिल पाये.

सावित्री देवी

प्रखंड : निरसा
जिला : धनबाद

विशिष्ट जनजातियों के लिए बदलाव की तैयारी

रूबी खातून

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

प्रशिक्षण लेते विशिष्ट जनजाति समूह के सदस्य.

रांची जिला अंतर्गत तुपुदाना के सप्तर्षि भवन में छह दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. झारखंड में विशिष्ट जनजातियों के जीवन स्तर में सुधार जेएसएलपीएस के उड़ान प्रोजेक्ट के जरिये किया जायेगा. इसके लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था. प्रशिक्षण में शामिल हुए भंडरिया प्रखंड के सीताराम देवार ने कहा कि वो सभी जंगलों-झाड़ियों में रहते हैं. उन तक सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं पहुंच पाता है. प्रशिक्षण में उन्हें बताया गया कि किस प्रकार से कार्य करना है और कैसे सरकारी योजनाओं का लाभ गांव तक पहुंचाना है. प्रशिक्षण के दौरान उन्हें एक प्रपत्र भरने के लिए बताया गया. जिसमें कहा गया कि इसके जरिये यह पता चल जायेगा कि गांव में कितने परिवार हैं और विशिष्ट जनजातियों के कितने परिवार हैं. गांव में कितने आंगनबाड़ी केंद्र हैं. कितने स्कूल हैं. कितने टोले हैं. सभी को प्रपत्र में भरना है. साथ ही प्रत्येक परिवार की जानकारी भी इसके जरिये सामने आ जायेगी. इस तरह से गांव में किन चीजों की जरूरत है, गांव के पास क्या संसाधन है, इसके बारे में जानकारी मिल जायेगी. पूरी जानकारी मिलने के बाद गांव में बदलाव के लिए कोशिश की जायेगी. प्राप्त जानकारी के अनुसार ही विकास के कार्य किये जायेंगे. इसके साथ ही जिन सरकारी योजनाओं का लाभ विशिष्ट जनजातियों तक नहीं पहुंच पाता है उसे सभी लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जायेगा. प्रशिक्षण पाने के बाद विशिष्ट जनजाति समुदाय के लोगों ने कहा कि अब उन्हें लग रहा है कि उनका भी कुछ वजूद है. अब उनका समाज भी विकास कर पायेगा. उन तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचेगा.

सुमित्रा के लिए वरदान साबित हुआ महिला समूह

सरिता देवी

प्रखंड : नवाडीह
जिला : बोकारो

अपने ईंट भट्ठा के पास सुमित्रा देवी

ग्रामीण विकास विभाग, झारखंड द्वारा संगठित महिलाओं का समूह महिलाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है. बोकारो जिला अंतर्गत नवाडीह प्रखंड की बारादीह पंचायत की 35 वर्षीया सुमित्रा देवी की कहानी किसी प्रेरणा से कम नहीं है. समूह से जुड़ने से पहले सुमित्रा की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी. पति राम प्रसाद महतो मजदूरी करते थे. उनकी आमदनी से घर का खर्च चलाना काफी मुश्किल था. इसलिए सुमित्रा काफी परेशान रहती थीं. वो कुछ व्यवसाय करना चाहती थीं, लेकिन पूंजी के अभाव में संभव नहीं हो पा रहा था. इस बीच सुमित्रा को जेएसएलपीएस द्वारा गांव में गठित किये जा रहे महिला समूह की जानकारी मिली. समूह की पूरी जानकारी हासिल करने के बाद सुमित्रा जून 2018 में गणेश आजीविका सखी मंडल से जुड़ गयीं. उन्हें समूह में सचिव चुना गया. समूह से जुड़े बहुत दिन नहीं हुए थे, इसलिए वहां से बड़ा रकम मिलना संभव नहीं था. समूह की सचिव होने के नाते वो हर महीना बारादीह आजीविका महिला ग्राम संगठन के ईसी-एक तथा ईसी-दो की बैठकों में शामिल होने लगीं. बैठक के दौरान पता चला कि सुमित्रा बारादीह आजीविका ग्राम संगठन से भी लोन ले सकती हैं. इसके बाद समूह के नाम पर 30,000 रुपये मिले. समूह से मिले ऋण और कुछ अपना पैसा मिलाकर सुमित्रा ने अपने पति के साथ ईंट बनाने का कारोबार शुरू किया. इस व्यवसाय को करने के बाद सुमित्रा काफी खुश हैं.

रोजगार का अवसर देता रोजगार मेला

रोजगार मेले में शामिल युवक-युवतियां.

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड अंतर्गत केबी उच्च विद्यालय के मैदान में रोजगार सह मार्गदर्शन मेले का आयोजन किया गया. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के अंतर्गत जेएसएलपीएस के सहयोग से ग्रामीण विकास विभाग द्वारा मेले का आयोजन किया गया था. ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की जानकारी देना इस मेले का प्रमुख उद्देश्य था. रोजगार सह मार्गदर्शन मेले के उद्घाटन समारोह में प्रमुख यशोदा देवी, प्रखंड विकास पदाधिकारी समेत जेएसएलपीएस के पदाधिकारी और स्थानीय जनप्रतिनिधि शामिल हुए. दीप प्रज्वलित कर मेला का उद्घाटन किया गया. इस मौके पर डुमरी और पीरटांड़ प्रखंड की सखी मंडल की महिलाएं व बेरोजगार युवक-युवतियों ने मेले का भ्रमण कर जानकारी ली और अवसरों की तलाश की. रोजगार मेले को संबोधित करते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि यह मेला बेरोजगार युवक-युवतियों के लिए एक सुनहरा मौका लेकर आया है. उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि नौकरी या रोजगार को एक लक्ष्य मान कर मेहनत करनी चाहिए. अगर इस तरीके से युवा मेहनत करेंगे तो उन्हें सफलता जरूर मिलेगी. मेले में अपोलो मेड स्किल, आनंद बुक प्राइवेट लिमिटेड, मास इंफोटेक सोसाइटी, एसएसजी एजुकेशन सोसाइटी, आइएल एंड एफएस समेत 10 कंपनियों ने अपना स्टॉल लगाया था. इसमें डुमरी और पीरटांड़ प्रखंड के सैकड़ों युवक- युवतियों ने अपना फॉर्म भरा. बीपीएम ने मेले के बारे में बताते हुए कहा कि मेले के माध्यम से सखी मंडल की महिलाएं और बेरोजगार युवक-युवतियों को प्रशिक्षण दिला कर रोजगार दिया जायेगा. सभी प्रशिक्षुओं की उम्र 18-35 के बीच होनी चाहिए. ग्रामीण क्षेत्र में युवाओं को पढ़ा लिखा होने के बावजूद जानकारी के अभाव में दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती है. रोजगार मेला का आयोजन उनके लिए एक बेहतर मौका है. महिलाओं और युवतियों को सिलाई और नर्सिंग का तीन महीने का प्रशिक्षण दिया जायेगा. प्रशिक्षण के बाद उन्हें नौकरी दी जायेगी. बेरोजगार युवकों के लिए भी मोबाइल रिपेयरिंग और होटल मैनेजमेंट की ट्रेनिंग देकर उन्हें भी रोजगार के अवसर दिये जायेंगे. इससे उन्हें प्रतिमाह साढ़े आठ हजार रुपये तक की आमदनी होगी.

मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

जनता दरबार में पहुंचीं दीदियां

गुमला जिले के भरनो प्रखंड अंतर्गत प्रखंड कार्यालय में जनता दरबार का आयोजन किया गया. जनता दरबार में काफी संख्या में सखी मंडल की महिलाएं पहुंचीं. इस दौरान समूह की महिलाओं ने भी अपना स्टॉल लगाया था. ग्रामीण विकास विभाग की ओर से समूह की महिलाओं ने स्टॉल लगाया था. स्टॉल में पौधा, दवा और बीज की जानकारी दी जा रही थी. दूसरे स्टॉल में समूह ग्राम संगठन और संकुल संगठन के बारे में विस्तार से बताया जा रहा था. इसके साथ ही स्टॉल में सभी प्रकार के बीमा आवेदन, सामाजिक सुरक्षा कोषांग के तहत वृद्ध, विधवा और दिव्यांग पेंशन की जानकारी दी जा रही थी. इसके साथ ही जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, आवासीय प्रमाण पत्र एवं राशन कार्ड का आवेदन देने के लिए जानकारी दी गयी. साथ ही मेले में जो भी फॉर्म भरे गये उन्हें विभाग में जमा करने का जिम्मा भी महिलाओं को दिया गया. समेकित बाल विकास विभाग द्वारा कन्यादान योजना का लाभ जनता दरबार में दिया गया. इसके साथ ही सखी मंडल की महिलाओं के परिवारों को इस योजना का लाभ लेने के लिए जोड़ा गया.

अनवरी खातून

प्रखंड : भरनो
जिला : गुमला

समूह से बदला तिलो का जीवन

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत जगन्नाथपुर प्रखंड के पिंतुगड़ा गांव की किस्मीस सिंकु बागवानी करते हुए आज एक सफल महिला किसान बन गयी हैं. एक वक्त था जब किस्मीस हमेशा घर में रहती थीं. पैसे की बहुत दिक्कत होती थी क्योंकि कमाने वाला एक ही था और खाने वाले कई थे. इसके बाद किस्मीस को स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली. समूह की पूरी जानकारी हासिल करने के बाद वर्ष 2016 में आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. इसके बाद किस्मीस ने कुछ करने की ठानी. सबसे पहले उन्होंने समूह से 50 रूपये का लोन लिया और घर के इस्तेमाल के लिए सामान खरीदी. इसके बाद उन्होंने समूह से 30,000 हजार रुपये लोन लिया. उनके पास काफी जमीन खाली पड़ी थी. इस जमीन में उन्होंने मटर, आलू, टमाटर, पालक और सरसों की खेती की. इसे बेचकर उससे तीन गुना मुनाफा कमाया. जैविक खेती का प्रशिक्षण लेकर जैविक खेती कर रही हैं. इसके अलावा मुर्गी और बकरी पालन भी कर रही हैं. इस तरह वो अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही हैं.

किरण कुमारी

प्रखंड : जगन्नाथपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

दाल भात योजना से बनीं आत्मनिर्भर

रांची जिले के बुड़मू प्रखंड अंतर्गत बुड़मू गांव के सोनी आजीविका महिला समूह की महिलाएं दाल भात योजना के जरिये दुकान खोल कर आत्मनिर्भर बन रही हैं. इससे उनके जीवन में काफी सुधार आया है. सोनी महिला समूह का गठन 2002 में हुआ था. उस वक्त सभी महिलाएं पांच रुपये बचत करती थीं. जब समूह में कुछ पैसे जमा हुए तो महिलाएं समूह से लोन लेकर अपना छोटा मोटा कारोबार करने लगीं. कोई सब्जी का तो कोई चावल का व्यापार करने लगीं. इससे समूह और समूह की दीदियों की आमदनी भी बढ़ी. इससे उत्साहित होकर सभी महिलाओं ने बैठक कर बड़ा व्यवसाय करने का फैसला किया. इसके बाद सभी महिलाओं ने प्रखंड कार्यालय में जाकर आमसभा में प्रस्ताव दिया कि उन्हें रोजगार दिया जाये. इसके बाद उन्हें मुख्यमंत्री दाल-भात योजना के तहत होटल खोलने का काम मिल गया. वर्ष 2007 में महिलाओं ने बैंक से 25 हजार रुपये का लोन लेकर होटल की शुरुआत की. जहां वह पांच रुपये प्लेट दाल चावल बेच रही हैं. समूह की ही रीना दीदी बैंक सखी का काम कर रही हैं. इससे सभी की जिंदगी में बदलाव आ रहा है.

कीर्ति देवी

प्रखंड : बुड़मू
जिला : रांची

आर्थिक रूप से मजबूत हुईं उर्वासिन

सिमडेगा जिला अंतर्गत पाकरटांड़ प्रखंड के ठेठइटांगर की उर्वासिन समूह से जुड़ कर खुद को आर्थिक रूप से सशक्त कर रही हैं. इसके साथ ही परिवार को गरीबी से बाहर निकालने में मदद कर रही हैं. इतना ही नहीं उनके जीवन में बदलाव भी आ रहा है. पाकरटांड़ की टिमटिम महिला समूह की अध्यक्ष उर्वासिन की आर्थिक स्थिति पहले बेहद खराब थी. पति मजदूरी का कार्य करने के लिए बाहर जाते थे. पति की कमाई से घर चलाना मुश्किल था. इसके बाद इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए उर्वासिन ने समूह से लोन लिया और अपने पति के साथ खेतों में सब्जियां उगाने लगीं. उर्वासिन ने अपने खेत में मटर, टमाटर, मूली, चना और पत्ता गोभी की खेती की. उनकी मेहनत रंग लायी और सब्जियों को बेच कर उन्हें अच्छी आमदनी हुई. इससे धीरे-धीरे उनकी स्थिति में सुधार आ रहा है. उनके दोनों बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं. अब उनके पति को कार्य करने के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता है. इस तरह से उर्वासिन अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही हैं. अपनी सफलता के लिए उर्वासिन जेएसएलपीएस को धन्यवाद देती हैं.

प्रियंका बिलुंग

प्रखंड : पाकरटांड़
जिला : सिमडेगा

epaper.panchayatnama.com